Part-II

Q. विश्व को कृषि प्रदेशों में बाँटे तथा किसी एक प्रदेश का वर्णन करें।

→ प्राकृतिक वातावरण के आधार पर कई विद्वानों ने विश्व को अनेक कृषि क्षेत्रों में बाँटने का प्रयास किया है। जिसमें विभाजन का मुख्य आधार जलवायु प्रदेशों को माना गया है और हंटिंगटन एवं श्री जॉनसन का वर्गीकरण प्रमुख है।

कृषि अध्ययन में कृषि प्रदेशों की संकल्पना का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। कृषि प्रदेश भूमि का एक विस्तृत क्षेत्र है, जिसमें कृषि करने की दशाओं तथा प्रतिरूप में व्यापक रूप से समानता मिलती है तथा जो समीपवर्ती क्षेत्रों से विशिष्ट रूप से भिन्न होता है, कृषि प्रदेशों का सीमांकन फसल-साहचर्य फसल-पशुपालन साहचर्य तथा फार्म क्रिया प्रविधियों आदि मानदण्डों के आधार पर होता है कृषि प्रदेशों सीमांकन करने वाले विद्वानों में डी ह्विटलसी का महत्वपूर्ण योगदान है। इसके अलावे बुकानन, गिलबर्ट तथा ग्रिग विद्वानों का योगदान भी महत्वपूर्ण है।

Scanned by TapScanner

सर्वप्रथम 1936 में डी व्हिटलसी ने कृषि प्रदेशों का वर्गीकरण किया, जिसमें उन्होंने निम्नलिखित आधार तत्वों को प्रदेशों के सीमांकन का मानक आधार माना था जो इस प्रकार है।

कृषि फसलों एव पशुओं का ~~पारिस्परिक~~ पारस्परिक संबंध :- कृषि का तात्पर्य फसलों के उत्पादन के साथ-2 पशुपालन से भी है। क्योंकि दोनों ही भूमि पर एवं मिट्टी की उत्पादन क्षमता पर निर्भर है तथा कृषि के लिए दोनों में पारस्परिक संबंध रहता है।

कृषि उत्पादन विधियां :- पृथ्वी के विभिन्न भागों में कृषि उत्पादन विधियों की भिन्नता के फलस्वरूप भी कृषि दशाओं की प्रादेशिक समानता एवं संबंधता मिलती है

कृषि में पूंजी, श्रम एवं संगठन आदि के विनियोग की मात्रा :- कुछ कृषि प्रदेशों में पूंजी का निवेश अधिक होता है तो कही श्रम का अथवा कही-2 दोनो का ही अधिक उपयोग किया जाता है। ~~अत~~

~~पूंजी~~ **कृषि उत्पादन के उपयोग का स्वरूप** :- यदि कृषि उत्पादन व्यापारिक दृष्टि से किया जाता है जब वहाँ विस्तृत प्रकार की फसलों के विशिष्टीकरण वाली कृषि होती है परंतु यदि उत्पादन कृषक के निजी उपयोग के लिए किया जाता है जब वहाँ निर्वाहक कृषि की जाती है। अतः कृषि उपज के उपयोग के तरीके से भी कृषि दशाओं में प्रादेशिक विविधता मिलती है।

कृषि उत्पादन में प्रयुक्त यंत्र एवं उपकरण तथा आवास संबंधी दशाए :- कृषि के उत्पादन में उपयोग किया जाने वाला यंत्र, उपकरण तथा आवास संबंधी दशाओं में विभिन्न क्षेत्रो में कृषि-भूदृश्य का ज्ञान होता है जो कृषि दशाओं की संबंधता का सर्वोत्तम ~~द्योतक~~ द्योतक है।

1936 में डी. व्हिटलसी (D. whittlesey) ने विश्व कृषि प्रदेशों का वर्गीकरण किया जो इस प्रकार है:-

(1) **चलवासी पशुचारण प्रदेश** :- इस प्रकार के कृषि क्षेत्रों का विस्तार अफ्रीका और एशिया महाद्वीपों में जहाँ वर्षा कम होती है या शीत के कारण फसलों का उत्पादन सम्भव नहीं है। अतः यहां लोग भेड़, बकरी, बकरियां, ऊँट आदि पालकर चलवासी पशु-चारण करते है। इसे घुमक्कड़ी या खानाबदोश पशुपालन भी कहा जाता है इन क्षेत्रों में फसलें उत्पादन हेतु प्राकृतिक

Scanned by TapScanner

दशाए अनुकूल नहीं है फिर भी ऐसे क्षेत्रों में पशुओं के लिए घास अथवा चारा मिल जाता है। यहाँ के लोग पशुओं को लेकर एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर चले जाते हैं तथा पानी में लगे रहते हैं। पशु इन लोग की सम्पत्ति होती है। ये पशुओं के साथ अपना तम्बू भी लेकर चलते हैं। इस प्रकार के जीवन यापन करने वाले जनजातियों में कजाके, कज्जाक, खिरगीज, लैप तथा मंगोल आदि हैं। ये लोग एक स्थान पर तभी तक रहते हैं जब तक वहाँ पशुओं के लिए चारा और पानी उपलब्ध रहता है। ये लोग तम्बू तथा कपड़े या चमड़े से अस्थायी झोपड़िया बनाकर निवास करते हैं। ये तब तक एक ही स्थान पर निवास करते हैं जब तक कि उनके अनुकूल तमाम दशाएं वहाँ से खत्म न हो जाए तब तक वे स्थानांतरित नहीं होते हैं। इस प्रकार की जीवन यापन की क्रियाए स्थायी एवं विकसित चरागाह बनाने में कमी आई है। अतः इस ओर सरकार का ध्यान आकर्षित हुआ जिससे स्थायित्व आ रहा है।

(2) <u>व्यापारिक पशुपालन प्रदेश</u> :- व्यापारिक पशुपालन खासकर उत्तरी तथा दक्षिणी अमरीका, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, दक्षिणी अफ्रीका गणराज्य आदि क्षेत्रों में किया जाता है जहाँ विस्तृत चारागाह क्षेत्र विकसित किया गया है। ऐसे क्षेत्रों में चलवासी पशुचारण से कुछ समानताएँ रखते हैं किंतु जहाँ पर प्राकृतिक दशाएँ पशुपालन के लिए अनुकूल है। इन प्रदेशों में धीरे-2 व्यापारिक पशुपालन पद्धति का विकास होने लगा। निजी चरागाहों को घेरा गया जिन्हें रैन्च कहते हैं। व्यापारिक पशुपालन के दो मुख्य क्षेत्र हैं :-

(i) समशीतोष्ण घास के प्रदेश

(ii) विस्तृत उष्ण सवाना प्रदेश

समशीतोष्ण घास के प्रदेशों में उत्तरी अमेरिका के प्रेयरी प्रदेश, दक्षिणी अमेरिका के पंम्पास क्षेत्र, दक्षिण अफ्रीका के वेल्डस, आस्ट्रेलिया के डाउन्स और यूरेशिया के स्टेप्स प्रदेश प्रमुख हैं। इन प्रदेशों में वैज्ञानिक ढंग से पशुपालन किया जाता है यहाँ दुग्ध, ऊन तथा मांस के लिए पशुपालन होता है।

उष्ण सवाना का विस्तार अफ्रीका महाद्वीप पर है जहाँ मवेशी पालन किया जाता है इस प्रदेश में लम्बी घास पाई मिलती है

और शुष्क गर्मी के कारण सूख जाती है इस क्षेत्र में हिंसक जानवर भी पाये जाते हैं। इस घास के मैदानों में जंगली जानवरों से पशुओं की सुरक्षा का कोई व्यवस्था नहीं है। यहाँ पशुओं के अच्छी नस्लें भी उपलब्ध नहीं हैं, यहाँ पशुपालन खासकर मांस एवं दुग्ध के लिए किया जाता है।

(3) स्थानांतरी कृषि प्रदेश :- इस प्रकार की कृषि उष्ण प्रदेशों में वर्षा वाले वनों तथा अर्द्ध मरुस्थलीय क्षेत्रों में किया जाता है। इसके अन्तर्गत दक्षिणी अमेरीका का अमेजन बेसिन, अफ्रीका का कांगो बेसिन, दक्षिणी पूर्वी एशिया तथा पूर्वी द्वीप समूह आते हैं। इस प्रकार की जाने वाली कृषि को अलग-2 क्षेत्रों में अलग-2 नाम से जाना जाता है। जैसे - अमरीका तथा अफ्रीका में मिल्पा मलेशिया एवं इन्डोनेशिया में लदांग, फिलीपिन्स में कैनजीन, श्रीलंका में चेना तथा भारत में झूमिंग कृषि।

स्थानान्तरणशील कृषि उष्णार्द्र कटिबंधीय प्रदेशों में की जाती है जहाँ वर्षपर्यन्त अधिक वर्षा तथा उच्च तापमान पाया जाता है इन क्षेत्रों में सघन जंगल पाया जाता है लोग हाथ से बने औजारों से या आग से जंगलों को जलाकर साफ किया जाता है। खेतों में खाद का प्रयोग नहीं किया जाता था कुछ समय तक खेती की जाती थी उसके बाद जब उर्वराशक्ति समाप्त होने के बाद लोग दूसरे स्थान पर जाकर पुनः जंगलों को साफ करते थे फिर उस भूमि पर खेती करते हैं यही प्रक्रिया बार-2 दोहरायी जाती है। इस प्रकार की कृषि शारीरिक श्रम पर आधारित होता है, तथा उत्पादन भी बहुत कम होता है। इसमें लोग मक्का, ज्वार-बाजरा तथा धान, केला, रतालू आदि फसलों की कृषि की जाती है।

व्यापारिक बागान कृषि प्रदेश :- व्यापारिक बागानी कृषि के अंतर्गत चाय, कहवा, नारियल, केला, मसाले, रबड़, कोको आदि फसलों का उत्पादन किया जाता है। इस प्रकार के कृषि पश्चिमी द्वीपसमूह, पूर्वी द्वीपसमूह, दक्षिणी अमेरिका तथा अफ्रीका में विस्तृत है। इस कृषि के विकास में यूरोप तथा अमेरिका का महत्वपूर्ण सहयोग रहा है क्योंकि ये राष्ट्र अपनी पूंजी निवेश करते थे।

इसका विकास खास का व्यवसाय के लिए हुआ है जिसमें मानवीय श्रम की प्रधानता

Scanned by TapScanner

खेती है। इस कृषि में मशीनों का प्रयोग भी किया जाता है। इस कृषि को करने के लिए समशीतोष्ण देशों से ही प्रशासनिक एवं कुशल तकनीकी श्रमिक, कृषि उपकरण, खाद, दवाईयां, श्रमिकों के भोजन, वस्त्र, परिवहन सामग्री, औद्योगिक मशीनें मंगायी जाती थी तथा श्रमिक स्थानीय हुआ करते हैं। विश्व में बगानी कृषि में फसलों का विशिष्टीकरण देखने को मिलता है जैसे असम में चाय, मलाया में रबड़ तथा ब्राजील में कहवा। इस कृषि के विकास में प्राकृतिक, आर्थिक, सरकारी नीतियों तथा अन्य तत्वों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इस कृषि के अंतर्गत उत्पादित फसलों का क्षेत्र इस प्रकार है रबड़ – मलेशिया, इण्डोनेशिया, गन्ना – क्यूबा, पेरू, ब्राजील, चाय – भारत, श्रीलंका, कोको – ब्राजील, कहवा – ब्राजील, मसाले – दक्षिणभारत, फिलीपींस, नारियल – दक्षिणी भारत, फिलीपीन्स, केला – मध्य अमेरिका, भारत इत्यादि।

वर्तमान समय में विश्व के अधिकांश देशों का ध्यान व्यापारिक पौधारोपण कृषि पद्धति कि ओर ध्यान आकर्षित हुआ है। इसका प्रमुख कारण आधुनिक मशीनों का प्रयोग है। व्यापारिक फसल नकदी अर्जित करती है अतः इसके विकास पर इस बात का अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पड़ता है।

Scanned by TapScanner